मुहब्बत का साया

(मुहब्बत में दीवानगी का काव्य-संग्रह)

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन
सी-46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन
नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर-302006
दूरभाष : 0141-2213700, +91-9829018087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : दिसम्बर, 2018
ISBN : 978-93-88167-89-5
कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'
आवरण संयोजन : बोधि टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 120/-

MUHABBAT KA SAYA (POETRY) by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

समर्पित

समर्पित है उस निर्मल और पवित्र प्यार को
जो हर-पल रोम-रोम में हमेशा विद्यमान है
जो प्रतीक है मीरा, राधा-कृष्ण के रिश्तों का
जो मिसाल है हीर औ रांझा के सम्बन्धों का
जिसमें घर और परिवार होने का अहसास है
जिसमें बेशुमार प्यार की चाहत व क़शिश है
जिसमें एक दूसरे की ज़रूरतों के जज़्बात हैं
जिसमें तन-मन के संसार होने का विश्वास है
जिसमें विचारों का इज़हार, इक़रार व क़रार है
जिसमें दिल से बेहिसाब बेख़ुदी का आलम है
जिसमें सतरंगी सावन व बसंत का मधुमास है
जिसमें शमा व परवाने की क़ुदरती कायनात है
जिसमें दिल की पुकार में सगुन की शहनाई हैं
जिसमें रस्मों औ रिवाज़ों के तीज व त्यौहार हैं
जिसमें विरह की वेदना मे मिलन की मुरादें हैं
जिसमें प्यार के अजर-अमर होने की कामना है
जिसमें सदियों तक साथ रहने की ख़्वाहिशें हैं
जिसमें प्यार एक साधना, उपासना, आराधना है
जिसमें मन की वीणा के मधुर गीत-संगीत है
जिसमें मुश्क़िल वक़्त में सहयोग की भावना है
जिसमें करवा चौथ के व्रत, सावन के सोमवार हैं
जिसमें एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान है
जिसमें प्रेम की हिफ़ाज़त में दिल से दुआयें हैं
जिसमें हर हालात में एक-दूसरे पर ऐतबार है
जिसमें सुहाग के सिंदूर, सात वचन के बंधन है
जिसमें मिलन की तमन्ना ख़ुदा की इबादत है
जिसमें चराग़ों की रोशनी बनने की भावना है
जिसमें प्यार की ख़ुशी में शजर का चिन्तन है
जिसमें प्यार इन्सान के लिए हवा औ पानी है
जिसमें तन व मन के भाव का ईश्वरीय बोध है।

अनुक्रम

मुहब्बत की हिफ़ाज़त	21
मुहब्बत की ख़्वाहिशें	28
मुहब्बत मेरे लिये	33
मुहब्बत का ऐतबार	39
राज़-ए-मुहब्बत	44
रियाज़	47
रिश्तों का बन्धन	51
समझदार प्यार	53
शजर में मुहब्बत	56
सिर्फ़ तुम हो	61
सुख़न के अरमान	64
तुम कहाँ चले गये हो	72
तुम क्या नहीं हो	77
उन्हें क्या ख़बर है	83
विरह की वेदना	85
यादगार मुहब्बत	89
महबूब का तसव्वुर	91
दिली ख़्वाहिशें	93
मधुर मिलन	95
मुहब्बत शजर का फलसफ़ा	99

अफ़साना-ए-मुहब्बत और
दर्द-ए-सुख़न की बेहतरीन शायरी
ज़िन्दाबाद-ज़िन्दाबाद 'साथी' जहानवी का ज़ुनून

बरस 1978 में मेरे एक शायर मित्र नदीम जयपुरी का एक शे'र याद आ रहा है:-

हुस्न जब लाज़वाब होता है
इश्क़ फिर बेहिसाब होता है

सच है हुस्न लाज़वाब है,तो इश्क़ भी बेहिसाब होगा ही,उसका पैमाना कहाँ है। 'साथी' जहानवी भी उन्हीं में से हैं,वो हुस्न के कागज़ पर इश्क़ की इबारत लिखते हैं,जो ख़त्म नहीं होती। उनकी दीवानगी कितने दीवान लिखायेगी हमें कहाँ मालूम। वो तो बकौल आनन्द बख्शी 'मेरे दीवानेपन की कोई दवा नहीं' कहने वाले नायक हैं वो ऐसे शायर हैं जिनकी पहचान 'जब-जब फूल खिले' से बनती है जहाँ वो एक दास्तान सुनाते हैं 'एक था गुल और एक थी बुल-बुल दोनों चमन में रहते थे'। ये गुल और बुल-बुल की कहानी ख़त्म कहाँ होती है। इश्क़ की तक़रीर और तफ़सील के लिये फ़लक़ भी छोटा होता है। ख़ुदा जाने 'साथी' जहानवी की कितनी कृतियाँ सामने आयेंगी। वो ख़ुद ही तो कहते हैं:-

मुहब्बत में मस्त इक दीवाना मुझमें
शमा पे जलता हुआ परवाना मुझमें

वो ख़ुद ही अपने काव्य संकलनों पर अपनी बात कहते हैं 'मेरे यह काव्य संग्रह उस पाक़ और बेइन्तहा मुहब्बत की तरह है जो राधा- कृष्ण, हीर-राँझा, सोहनी-महीवाल,लैला-मजनू, शीरी-फ़रहाद जैसी हैं'। ये लिखते-लिखते मुझे आदरणीय दीदी कमला शबनम (सीने स्टार अन्नू कपूर की माँ) का ये शे'र आद आ रहा है:-

मुहब्बत में अन्ज़ाम क्या देखता है
यह सुबह औ शाम क्या देखता है

यह मुहब्बत है, मुहब्बत करने वाले कभी कम नहीं होते। वो लिखते भी जा रहे हैं और कहते भी जा रहे हैं। किसी एक विषय पर इतनी सारी रचनायें लिखना यदपि नामुमक़िन तो नहीं है मगर बेहद मुश्क़िल ज़रूर होता है इस लिये रचनाओं में, शब्दों में, सोच का दोहराव आ ही गया हो फिर भी यथा सम्भव इस दोहराव से बचने की क़ोशिश की गई है।

अजय शर्मा 'साथी' जहानवी की शायरी आम आदमी की शायरी है:-

मेरी कविताओं में मधुर प्यार हो
मेरे तन और मन का संसार हो
मेरे बेक़रार दिल की पुकार हो
शजर के चिन्तन का विचार हो
तन्हाई में मिलने का ऐतबार हो
बेज़ुबान तसव्वुर का समाचार हो

शायरी वही तो है जहाँ कहा जाता है 'आ लौट के आ जा मेरे मीत तुझे मेरे गीत बुलाते हैं'। उसके बिना सारी धड़कनें सूनी है, संगीत सूना है। नीरज कहते हैं 'मैं किसी नयन का नीर बन बस अर्घ्य तुझे चढ़ाता हूँ' जहाँ शायर कहता है 'चले भी आओ कि गुलशन का कारोबार चले'। शायरी गुलों का अहसास है कलम की ख़ुश्बू का जादू है। मुहब्बत है तो ग़म भी है और कभी ख़ुशी भी है। शायरी में कभी प्रेमी कहता है कि 'सो नहीं जाना अभी मेरी कहानी चल रही है' कहीं प्रेमिका कहती है 'यह चराग़ बुझ रहे हैं मेरी साथ जलते-जलते'। बहरहाल इस प्यार को महफ़ूज़ रखने के लिये शायर क्या कहता है:-

प्यार महफ़ूज़ रखने के लिये ज़माने से अदावत रहे
महबूब के लिये ख़ुद अपने आप से भी बग़ावत रहे

सच में शायरी अपने आप से बग़ावत है कृष्ण बिहारी नूर कहते हैं 'इतने हिस्सों में बँट गया हूँ मैं,मेरे हिस्से में कुछ बचा ही नहीं'। कहीं यह हाल 'साथी' जहानवी का

तो नहीं। ज़िन्दगी में दोस्ती कामयाब रहे रिश्ते बेमिसाल रहे, इस ज़िन्दगी को ज़िन्दगी की तरह जिया जाये। शायर की ज़िन्दगी मिसाल रहे यही तो चाहता है शायर:-

हमारा प्यार इस ज़माने के लिये मिसाल रहे
पाक़ मुहब्बत की दास्ताँ दिलों में कमाल रहे

'साथी' जहानवी दिलों में कमाल रखना चाहते हैं,वो ज़िन्दा दिल शायर हैं। प्यार से चमन आबाद है,नदियों के धारे बह रहे हैं, गुलों के कारोबार चल रहे हैं, प्यार की रोशनी में ज़िन्दगी की बन्दगी होती है। 'साथी' जहानवी भी आशियाना आबाद चाहते हैं:-

मधुर-मिलन की मुलाक़ातों के
पोषण से फलते और फूलते हैं
जज़्बात, विश्वास व अहसास से
महकते आशियाँ आबाद होते है

शायरी का यही तो सामाजिक सरोकार है। शायर और कुछ दे या न दे पैग़ाम-ए-मुहब्बत ज़रूर देता है। कृति के छन्द मुहब्बत के साथ-साथ सामाजिक सरोकार रखते हुये चलते हैं। वो मुहब्बत के रिश्ते को दिल में समाने की बात कहते हैं, वो कहते हैं कि:-

मुसलसल रियाज़ की क़ोशिश से
हर मुश्क़िल आसान हो जाती है
मधुर मिलन के जज़्बात रख कर
ज़िन्दगानी ख़ूबसूरत हो जाती है

सच तो यह है। अजय शर्मा जहानवी की अधिक से अधिक कृतियाँ इसलिये सामने आ रही हैं कि 'मेरा पैग़ाम मुहब्बत है जहाँ तक पहुँचे'। अहसास-ए-मुहब्बत है तो सब कुछ है, दिलों में रंग है, ये बादे सबा है, ये चाँद है, सूरज है, नील गगन है, तू है मैं हूँ। इस ज़हान में सब नष्ट हो जाना है। मुहब्बत और ख़ुलूस ही बाकी रहता है। सन्तोष आनन्द इसी लिये तो कहते हैं 'ज़िन्दगी और कुछ भी नहीं तेरी मेरी कहानी है'। 'साथी' जहानवी कहते हैं मेरे प्यार तुम्हें समझदार होना ही होगा, किस लिये:-

प्यार का अहसास करने के लिये
ग़लतियों को माफ़ करने के लिये
दिल को पाक़ साफ़ करने के लिये
रिश्तों का विश्वास करने के लिये

शायर कहता है 'ग़म उठाने के लिये मैं तो जीये जाऊँगा' यही बन्दगी है। ओह! मेरे मधुर प्यार,मेरे तन मन के सम्पूर्ण संसार, जब चाहत और क़शिश के बीज जब दिल मे अंकुरित होते हैं उसके बाद अहसासों के गुलशन में रिश्तों के शजर जन्म लेते हैं। शायर कहता है मेरी शायरी पाक़ है, इबादत है, ख़ुदा की नियामत है:-

मेरी शायरी में मेरे महबूब के
हसीन और पाक़ जज़्बात हों
मेरे गीत ग़ज़ल के लफ़्ज़ों में
मेरे प्यार की ही मुलाक़ात हो

साहित्य की ये विशेषता है कि वह हमारे लिये सांस्कृतिक सम्बन्धों को संजोकर रखता है। शायद इस लिये शायर ने अपनी शायरी में करवा चौथ को भी जोड़ा है। वो कहता है:-

मेरी तो सिर्फ़ इतनी सी इल्तज़ा
और ख़ुदा से पाक़ दुआयें हैं कि
मेरे शे'र और सुख़न को पढ़कर
करवा चौथ का त्यौहार आ जाये

शायर अजय शर्मा ने इस कृति को कई हिस्सों में बाँटा है, सब हिस्सों में तन-मन की पवित्रता के साथ मुहब्बत का अहसास और मधुर मिलन की तमन्ना है। एक हिस्से में शायर कहता है ओह! मेरे मधुर प्यार, तुम मेरे लिये क्या नहीं हो, तुम मेरा सम्पूर्ण संसार हो। वो कहता है:-

तुम मेरे लिये बसन्त के मधुमास हो
जज़्बातों व ज़रूरतों के अहसास हो
दिल औ दिमाग़ में पूर्ण विश्वास हो
मिठास और क़शिश का आभास हो

एक शायर कहता है 'मुझे ख़ाक़ में मिलाने से पहले मेरा दिल निकाल लेना,किसी और की अमानत मेरे साथ चली न जाये'। शायर अपने दिल को महबूब की अमानत मानता है वो आख़िरी वक़्त में अपने साथ नहीं ले जाना चाहता। दिल वैसे ही दर्दो-ग़म में बहुत तप चुका है। 'साथी' जहानवी इस कृति की रचना 'क्या ख़बर है' में कहते हैं:-

आपके लिये ही दर्द सहते हैं
आपके लिये ग़मों को पीते हैं
आपके लिये ही तो सजते हैं
आपके लिये ही तो सँवरते हैं

इस कृति को हर हिस्से में महबूब के अहसास को ले कर विशिष्ठ विविधतायें हैं। उनके दिल में तरह-तरह की ख़्वाहिशें हैं, एक जुनून है जो हर साल उनसे सृजन करवा कर छह-सात कृतियों का लोकार्पण करवाता है। इसमें ही उन्हें सुक़ून मिलता है लोग उन्हें पाग़ल कह सकते हैं। कुमार विश्वास भी ख़ुद को पाग़ल दीवाना कहते हैं। आनन्द बख़्शी कहते हैं 'मेरे दीवानेपन की कोई दवा नहीं'। 'साथी' का ये पाग़लपन बना रहे। उनके इस जज़्बे के लिये मेरी ग़ज़ल के दो शे'र हैं:-

ऐसी दौलत जो सुक़ून देती है
वह सुख़नवर के पास रहती है
वो तेरे नक़्शे पाँव चले भी क्यों
उसे कुछ और ही धुन रहती है

उन्हें हम क्या दे सकते हैं बधाइयों और शुभकामनाओं के सिवा। उन्हें आशीष, बधाइयाँ और शुभकामनायें।

जितेन्द्र निर्मोही
बी-422, आर.के.पुरम, कोटा-324010
मो. : +91-94143007724

18 अप्रेल, 2018
परशुराम जयन्ती
बैशाख शुक्ल तृतीया

अभिमत

झील जैसे नीले नयनों में नज़ारा निराला है
गुलाबी गालों पर रसीले होठों का प्याला है
अंग-अंग और रोम-रोम प्यार में नशीला है
प्रेम के अहसास से जीवन एक मधुशाला है

कुछ इसी तरह के जज़्बात अजय शर्मा 'साथी' जहानवी के काव्य संकलनों में हैं। इनकी काव्य यात्रा का कल्पना लोक असामान्य है। वे मुहब्बत में गहरे पैठ कर लिखते हैं। मुख्य रूप से उनके कलाम में शहरी मध्यमवर्गीय जवान मुहोब्बतियों की आप बीती प्रेमालापी मालिकायें हैं। उनकी पोथियों में सबका केन्द्रीय विषय मुहब्बत या प्यार ही है। वे केवल प्रेम से अपनी रचनाओं की शुरूआत करते हैं और प्रेम पर विराम देते हैं, वो प्रेमी जो प्यार में ज़िन्दगी बिता देने को ही प्रतिबद्ध है फिर भी प्राथमिकतायें बदलते हैं, प्रेम को बीत जाने देते हैं। उनकी निग़ाह में इश्क़ एक नकचढ़े तिफ़्ल (बच्चा) की मानिन्द है, जब तक गोद में उठाये हुये दुलराते, हिलराते रहो तब तक ख़ुशियों के असबाब से मालामाल कर देगा लेकिन जैसे ही गोद से उतारो चिचियाने लगेगा, मिमियाने लगेगा और शर्मसार कर देगा आपको। 'साथी' अपने सहयात्री के बारे में कुछ ऐसा ही अपनी पुस्तकों में यहाँ-वहाँ बयाँ कर देते हैं।

जैसे मैंने अपने कथन में पूर्व में उनके कलाम का नमूना पेश किया है उसे पढ़ कर आपको लगा होगा कि वह अनेक बार दर्शन में खो जाते हैं, अनेक उपमान और उपमाओं का इस्तेमाल करते हैं, पूरी तरह डूब जाते हैं, खो जाते हैं, सराबोर हो जाते हैं, शब्द चमत्कार के फेर में उलझ जाते हैं लेकिन भटकते नहीं, बस यही उनकी लेखनी की विशेषता है। यहाँ मुहोब्बत के मैदान में उनकी प्रवृति पलायनवादी नहीं है। लौटकर आना ही प्रकृति का धर्म है। उनकी रचना धर्मिता में आपको कुछ नया नहीं लगेगा। कुछ अजूबा नहीं लगेगा वही जो कुछ समाज में गुज़रता आया है गुज़र रहा है और भविष्य में भी गुज़रता रहेगा। अगर मैं सच कहूँ तो बात दरअसल ये है कि आप

नया चाहते ही कब हैं। आपने तो उसे ही मक़बूल (लोकप्रिय) किया है जो आपकी अपनी बीती कह सके। इस बात को देखते हुये 'साथी' जहानवी अपनी बात कहने में सफल रहे हैं। वे प्यार की लजीज़ी और उसकी शुष्कता के पैमाने को समान रखते हुये अपनी कविताओं को अन्ज़ाम तक पहुँचाने में सफल रहे हैं। कविताओं का प्रवाह लहलहाते चमन में खिले फूलों की ख़ुश्बू में लिपटा हुआ एक मंज़र सा लगता है जिसमें ख़रामा-ख़रामा (धीरे-धीरे) गुज़रने को दिल करता है। कहीं किसी प्रकार की जल्दी, ऊब कर निकलने को जी नहीं करता। कविताओं में प्रेम के अलावा भी समाज है, रिश्ते हैं, प्रकृति है,पूरी कायनात है, मिलन और बिछोह है, तिरस्कार है, तक़रार है, समर्पण है, शीत ऋतु की ताज़गी है, ग्रीष्म की चिलचिलाहट ये सभी घटक मिलकर पुस्तक के कलेवर को पठनीय बनाने में सहायक सिद्ध हुये हैं।

यह बहुत बड़ी बात है कि आज के इस दौर में प्यार पच ही कहाँ पाया है। उस पर विकराल काल की गहरी छाया है कि 'साथी' जहानवी ने इस तिजारती(पूँजीवादी) युग में भी उसे सहेज कर रखा है। ये श्लाघनीय(प्रसंशनीय) है। आस-पास की दुनिया से उठाये हुये इनके बिम्ब। लगता है जैसे सब सुने हैं, देखे हैं, अनुभव किये हैं। वही प्रेम की चालबाज़ियाँ, बेवफ़ाई, इज़हारे मुहब्बत, ख़ुद को कोसना, ख़त, आँसू, सब-कुछ वैसा का वैसा जो आप महसूस करते हैं, आपसे अलग नहीं। दिल को रूमानियत की ख़ुराक देनी है तो पढ़िये 'साथी' के कलाम।

अन्त में आप पायेंगे कि वे इस इश्क़ के दरिया में, उसकी अतुल गहराई में डूब कर जाना चाहते हैं जहाँ दरिया की लहरों के बाद एक सख़्त ज़मीन भी है जहाँ वे अपने को स्थाई रूप से अडिग हो कर खड़ा होना चाहते हैं। बक़ौल ग़ालिब:-

ये इश्क़ नहीं आसाँ, इतना तो समझ लीजे
इक आग का दरिया है, और डूब के जाना है।

आपका अपना

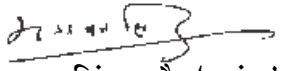

-भगवत सिंह जादौन 'मयंक'
(सेवानिवृत व्याख्याता एवं वरिष्ठ साहित्यकार)
346, लक्ष्मण मार्ग, सरस्वती कॉलोनी, खेडली फाटक, कोटा-324001
मो. : 9414390988, 9057579203

दिली गुफ़्तगू

(जज़्बात-ए-साथी)

11 जनवरी 2015 को एक साथ पाँच काव्य संग्रहों बेगुनाही के सुबूत, सहरा में शजर, समन्दर में बारिश, सावन में पतझड़, कैंसर के पाँचवें हालात और website www.xyzsathi.com और दिनांक 16 अप्रैल 2017 को एक साथ छह रूमानियत काव्य संग्रह ओह! मेरे मधुर प्यार, विरह की वेदना, दिल की पुकार, मुहब्बत एक शजर का फलसफ़ा, मन का संसार और बेज़ुबान तसव्वुर के मंजरे-आम (विमोचन) के बाद सात काव्य संग्रह जिसमें से पाँच रूमानियत काव्य संग्रह तन्हाई के तसव्वुर, मुहब्बत एक इबादत, ख़ामोश निग़ाहें, जुदाई के जज़्बात, मुहब्बत का साया और दो सामाजिक काव्य संग्रह 'अमावस का चाँद' और 'क़तरा-क़तरा दरिया' आपकी नज़र कर रहा हूँ।

गुज़िश्ता वक़्त में शायरी अपने महबूब से गुफ़्तगू का ज़रिया हुआ करती थी। मेरे यह काव्य संग्रह भी इसी सिम्त महज़ एक कदम है। ज़िन्दगी के सफ़र में मुहब्बत के कई रंग और मन्ज़र से मैं आशना और बावस्ता रहा। मसलन मिलन, तन्हाई, जुदाई, ख़ामोशी, इबादत, गिले-शिक़वे, बेरुख़ी, तौहीन, रन्ज़ो-ग़म, बेचैनी, बेक़रारी, दीवानगी, बेख़याली, बेख़ुदी, इज़हार, इक़रार, सुकून, वफ़ा, ज़फ़ा, बेवफ़ाई, रुसवाई, मज़बूरी, हसरत, ऐतबार, इन्तज़ार, मायूसी, बदहाली, क़शिश, चाहत, अहसास, रूठना-मनाना और भी बहुत कुछ। मुहब्बत को जिस तरह से जिया उसे ही शायरी की शक़्ल में तहरीर करने की कोशिश की है याने मुहब्बत के ज़ज़्बात, मुहब्बत के लिये। मुहब्बत के गुलशन को आबाद होने के लिये इज़हार, इक़रार, गुफ़्तगू और मुलाक़ातें इतनी ज़रूरी नहीं है जितना मुहब्बत के अहसास का अपने दिलो-दिमाग़ और ख़्वाबो ख़यालों में हमेशा ज़िन्दा रहना ज़रूरी है।

मेरे यह काव्य संग्रह उस पाक़ और बेइन्तहा मुहब्बत जो राधा-कृष्ण, हीर-

राँझा, सोनी-महिवाल, लैला-मजनू, शीरी-फ़रहाद की मुहब्बत जैसी है जिसमें निर्मल व पवित्र, इन्सानियत व हमदर्दी की भावनायें हैं और जो अजर-अमर है को समर्पित है जो बेहद मज़बूर,लाचार और बेबस होने के बावजूद भी अपने महबूब से मिलने और एकसार होने के लिये इतनी बेचैन और बेक़रार है कि ख़ास अपनों से और सारे ज़माने से बग़ावत के लिये तैयार है। मगर ज़माने के रस्मो-रिवाज़ और हालात से बहुत बेबस है। मुहब्बत में इस कदर बेख़ुदी का आलम है कि हर वक़्त अपने महबूब का ख़याल ही हमेशा दिल और दिमाग़ में रहता है। सांसों की हर धड़कन में उसका अहसास इतना ज़रूरी है कि उसके बिना ज़िन्दा रहना मुश्क़िल ही नहीं नामुमक़िन है। मुहब्बत में इस कदर जोश व जुनून और दीवानगी है कि जान कुर्बान करने को भी तैयार है। वादे व इरादे और जज़्बात व ख़यालात इस कदर बेहद मज़बूत है कि तमाम उम्र के लिये हर हालात में शरीके हयात बनकर हमसफ़र रहने को तैयार है। विरह की व्याकुल वेदना में अपने तन-मन से भी बेसुध और सारी कायनात से भी बेख़बर है। ख़्वाबों और ख़यालों में सिर्फ़ और सिर्फ़ हर वक़्त अपने महबूब का अक़्स और फलसफ़ा रहता है। मालूम है कि आख़िर में क्या होगा मगर मुहब्बत में दिल और दिमाग़ इतना दीवाना होता है कि किसी की भी नहीं मानता। उसे तो अपना महबूब ही सब कुछ नज़र आता है। यहाँ तक कि ख़ुदा से कम नहीं लगता। मुहब्बत के अहसास, क़शिश और चाहत को मुक़म्मिल तौर पर सही तरह से तहरीर करना बेहद मुश्क़िल है। महबूब का आशियाना जन्नत और ख़ुदाई से बेहतर लगता है। तन्हाई में महबूब की यादों में रहना ज़ियारत से कम नहीं है। जुदाई का वक़्त काले पानी की सज़ा से भी ज़्यादा है। यह कहना बेहद मुनासिब होगा कि मेरी मुहब्बत का यह आख़िरी और मुक़म्मिल फलसफ़ा है कि मेरा प्यार मेरे तन-मन, मेरे दिल औ दिमाग़ यानी मेरी ज़िन्दगी की कायनात का सम्पूर्ण संसार है।

मुहब्बत का यह ख़ूबसूरत सफ़र उस मन्ज़िल पर है जहाँ पर एक-दूसरे को शरिके हयात का अहसास रहता है इसलिये मैंने शायरी में ऐसे शब्दों को काम में लिया है जैसे सुहाग का सिन्दूर, करवा चौथ का व्रत, वरमाला, सात फेरे, सात वचन, सुहाग की सेज, घर परिवार, रस्मो रिवाज़ के बन्धन जो कि एक शादीशुदा ज़िन्दगी में ही यह सब कुछ होता है। निर्मल और पवित्र प्यार अजर और अमर मुहब्बत का मक़सद ऐसा होना चाहिये जिसमें शरीके हयात के ऐतबार, अहसास, जज़्बात, ज़रूरतों,

परेशानियों, मज़बूरियों और बेबसी के मुक़म्मल तसव्वुर दिलो-दिमाग़ में रहे और मुहब्बत जन्मों-जन्मों के लिये सात फेरों के बन्धन में बन्धने को बेहद बेताबी और बेसब्री से बेहद बेचैन और बेक़रार रहे। ख़ुदा ख़ैर करे कि मुहब्बत का यह सफ़र ज़िन्दगी के इस मुकाम पर हर हालात में ज़रूर पहुँचे जहाँ पर दो बदन एक जान हो जाते हैं और दुनिया से बेख़बर हो जाते हैं।

वैसे रूमानियत शायरी करना मुश्क़िल है। महफ़िल में सुनाना और दीवान की शक़्ल देना तो और भी बेहद मुश्क़िल है। रूमानियत सुख़नवर को जिस नज़र से देखा जाता है वह शख़्सियत अच्छी नहीं मानी जाती है फिर भी मैं यह नादान ग़ुस्ताख़ी कर ख़तरा मोल ले रहा हूँ। उम्मीद है मेरी यह कोशिश आपको पसन्द आयेगी और आपके दिलो-दिमाग़ को सुकून मिलेगा। अपने दिली जज़्बातों से मुझे ख़बर करने की मेहरबानी ज़रूर करें। आपके जज़्बात, ख़यालात और सलाह मेरे लिये बहुत अहमियत रखती है। इन काव्य संग्रहों में कुछ ऐसा लिखने में आ गया हो और जिससे किसी के दिल और दिमाग़ को ठेस पहुँचती है तो मैं तहेदिल से माफी माँगता हूँ। यक़ीनन ऐसा मेरा कोई इरादा नहीं था।

किसी एक विषय पर इतनी सारी रचनायें लिखना यदपि नामुमक़िन तो नहीं है मगर बेहद मुश्क़िल ज़रूर होता है इसलिए रचनाओं में शब्दों व सोच का दोहराव आ गया हो फिर भी यथा सम्भव इस दोहराव से बचने की तमाम कोशिशें की गई है। अधिकतर रचनायें ग़ज़ल जैसी विधा में है। ग़ज़ल के तमाम शेर एक ही विषय पर हों यह ज़रूरी नहीं होता है। फिर भी एक ही विषय पर ग़ज़ल जैसी विधा में रचनायें लिखकर मैनें नई परम्परा आरम्भ की है जो कि रचना की विषय वस्तु से पूरी तरह से तालमेल रखती है। जब रचनायें एक ही विषय पर अधिक मात्रा में हो जाती हैं तो रचना संसार भी विस्तृत हो जाता हैं। तब फिर नई-नई उपमायें और प्रतीकों का सृजन होता है। मैंने बहुत सारे ऐसे शब्दों, उपमाओं और प्रतीकों का प्रयोग किया है जिनकी बानगी इन रचनाओं में देखी जा सकती है। ऐसा है मेरा प्यार, महबूब का इस्तक़बाल, चाहत का चिन्तन, चाहत और क़शिश मेरे लिये, मुहब्बत मेरे लिये, प्रकृति और प्यार, बेबस दिल की पुकार, विरह की वेदना, क्या यह मुमक़िन होगा, शजर का फलसफ़ा, महबूब का तसव्वुर और मुहब्बत के सुबूत। अमूमन रूमानियत शायरी में ऐसा होता

नहीं है। उम्मीद है कि इन रचनाओं में इन उपमाओं से कुछ नया ज़रूर लगेगा और आप अच्छा महसूस करेंगे। हो सकता है भविष्य में यह रचनायें रूमानियत शायरी के सन्दर्भ में आम आदमी के लिये चर्चा का विषय बन जाये।

मेरी यह ख़्वाहिश और तमन्ना नहीं है, मेरी यह आरजू और मन्नत भी नहीं है कि, मेरी शायरी इल्मी अदब की महफ़िलों में शायरों के लिए मयार (उच्चस्तर) की हो व बज़्म में पायेदार (सम्मान-जनक) भी हो। तमाम शायर मेरी शायरी पर तबादला-ए-ख़याल (विचार-विमर्श) कर अपना बेशक़ीमती वक़्त बर्बाद करें। मेरी तो सिर्फ़ इतनी सी इल्तज़ा (प्रार्थना) और ख़ुदा से ताहीर (निर्मल) और पाक़ दुआ है कि मेरी शायरी में मेरे महबूब के निर्मल व पवित्र अहसास, हसीन व ख़ूबसूरत जज़्बात, ख़्वाब व ख़याल, यादें व मुलाक़ातें, दिल का ऐतबार, क़रार व इन्तज़ार, पाक़ दुआयें, चैन व सुक़ून, दास्तान व अरमान, आराधना व साधना, दिल की पुकार, विरह की वेदना, मधुर-मिलन, शजर का चिन्तन, दीदार व मिलन, त्यौहार व परिवार, रोम-रोम का आभास, तन-मन का विश्वास यानि मेरे महबूब के तन-मन के सम्पूर्ण संसार के सिवाय कुछ नहीं हो।

विस्तृत अर्थों और सन्दर्भों में मुहब्बत महज़ एक ख़याल और तसव्वुर नहीं है। हज़ारों सालों का इतिहास ग़वाह है कि प्यार की वज़ह से वो भी मुमक़िन हो गया जो बेहद नामुमक़िन था। हक़ीक़त और यथार्थ में कोई पारिवारिक और सामाजिक बन्धन में बन्धकर नर्क से भी बदतर ज़िन्दगी को जी रहा है। यदि उसे महज़ तसव्वुर में अपने महबूब से हसीन मुहब्बत का ख़ूबसूरत अहसास हो जाता है और अपना नर्क से भी बदतर जीवन जन्नत से भी बेहतर लगता है और अपना तन-मन, रोम-रोम और दिलो दिमाग़ इतना ख़ुशगवार लगता है कि जैसे सावन और बसन्त के मधुमास में गुलशन हरियाली और ख़ुश्बुओं से महक कर आबाद रहता है। मैं तो इन ख़यालात को किसी भी प्रकार से ग़लत नहीं समझता हूँ और मुहब्बत को अक़ीदत (श्रद्धा) समझकर इबादत (पूजा) करता हूँ।

'क्या यह मुमक़िन होगा' शीर्षक से जो रचनायें हैं उनमें प्यार की वज़ह से जो हालात तन-मन, दिल और दिमाग़, रोम-रोम और अपनी ज़िन्दगी पर जो बेहद गहरा असर होता है वह कैसे ख़त्म हो सकता है उनको बयान करने की कोशिश की है।

महबूब का इस्तक़बाल (स्वागत) शीर्षक से जो रचनायें है वह फ़िल्मी गीत 'बहारों फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है' से प्रेरित है जिसमें यह लिखने की कोशिश की है जब महबूब प्रथम मधुर मिलन के लिये आता है उसके स्वागत में लिखी गई रचनाएँ हैं जिसमें महबूब के स्वागत में अनेक तरह के दिली जज़्बात, अहसास, सारी की सारी कायनात से इसरार और निवेदन, अभिनन्दन और अभिवादन तहरीर किये गये हैं। 'ऐसा है मेरा प्यार' शीर्षक से जो रचनायें हैं उनमें प्यार को कई तरह से उन उपमाओं से परिभाषित किया गया है जो दैनिक जीवन में काम आती है। इन रचनाओं में आधुनिक परिवेश की परम्परागत परिवेश से तुलना कर प्यार के अहसास और जज़्बात को अनूठा और निराला बनाये रखने की दिली ख़्वाहिशें और तमन्नायें हैं। और भी बहुत सारी रचनायें है जो एक ही विषय वस्तु पर एक ही शीर्षक पर अलग-अलग तरह से बहुत बार लिखी गई है ताकि उस विषय वस्तु का सम्पूर्ण वर्णन किया जा सके। बेबस दिल की पुकार, मधुर मिलन, मन की मुरादें, महबूब का अक़्स, मुहब्बत का अहसास, मिलन की मन्नतें, महबूब का तसव्वुर, आदि तवील रचनायें है जिसमें मुहब्बत की दास्तान को मुक़म्मिल तौर पर तहरीर किया गया है। महबूब का तसव्वुर रचना में महबूब को माँ, पत्नी, बहन, दोस्त,औरत, बेटी और महबूब के तसव्वुर में ख़याल किया गया है।

काव्य संग्रहों के शिल्प में कई कमियाँ और गलतियाँ हो सकती हैं जानकार और समझदार इसे नज़र अन्दाज़ कर, एक आम आदमी बनकर अपने दिली जज़्बात और अहसास को अपने महबूब से गुफ़्तगू के रूप में देखेंगे तो आपको चैन और सुक़ून मिलेगा। दिल से किये गये काम में कुछ भी अच्छा बुरा नहीं होता सिर्फ़ और सिर्फ़ दिल की आवाज़ होती है जो अच्छी हो या न हो यक़ीनन बुरी तो नहीं होती। इन रचनाओं को इस सन्देश 'मेरा पैग़ाम अहले मुहब्बत है जहाँ तक पहुँचे बहुत पहुँचे' के रूप में देखा जाये।

इन काव्य संग्रहों के मुक़म्मिल होने में जो योगदान श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक' और श्री शम्भू दयाल विजयवर्गीय ने दिया है उसके लिये मैं उनका बेहद शुक्रगुज़ार हूँ। बेशक़ीमती अभिमत के लिये श्री विष्णु शर्मा 'विष्णु',श्री रामेश्वर शर्मा' रामू भैया', श्री अम्बिका दत्त चतुर्वेदी, श्री जितेन्द्र 'निर्मोही', जनाब शकूर

अनवर, श्री महेन्द्र 'नेह', श्री अरविन्द सोरल का तहेदिल से शुक्रिया अदा करना मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ। शायरी को बेब साइट www.xyzsathi.com पर भी पढ़ा जा सकता है।

इस अश्आर के साथ अपनी गुफ़्तगू को ख़त्म करता हूँ।

मुझे दुनियादारी का सिर्फ़ इतना सा ही ज्ञान है
मुहब्बत ही ख़ुशहाल ज़िंदगी के लिये विज्ञान है।

तहेदिल से आपका अपना

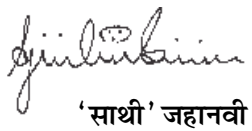

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)
आम आदमी की मुहब्बत का शायर

प्रथम मंजिल, दीपश्री भवन
मल्टीपरपज स्कूल के सामने, गुमानपुरा कोटा 324007
मो. : 9414227447, 9214427447

मुहब्बत की हिफ़ाज़त

हाँ मैं मेरे महबूब का संगीन गुनाहग़ार हूँ
हाँ मैं उसके प्यार का बेरहम क़ातिल हूँ
हाँ मैं उसकी उम्मीदों के लिए ज़ालिम हूँ
हाँ मैं उसके मन की मुरादों का हैवान हूँ
हाँ मैं उसके जज़्बातों के लिए ज़ल्लाद हूँ

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हाँ मैंने ईश्वर के सामने सरासर झूठ बोला
ईश्वर को साक्षी मान कर झूठी कस्में खाई
अपने आप को सोच-समझ कर धोखा दिया
अपने आपको तन औ मन से बदहाल किया
अपनों की नज़र में बेईमान भी साबित किया
मैंने ख़ुद अपने आप से भी बेहद बेवफ़ाई की
हाँ मैंने वह सब कुछ बहुत बुरा ग़लत किया
जो ज़माने की नज़रों में बेहद ग़लत होता है

यह सब कुछ ग़लत करने के लिए
मैं बहुत बेचैन, मज़बूर व लाचार था
मैं दिलो-दिमाग़ से बेहद बेताब था
क्योंकि मुझे आपके पवित्र प्यार के
निर्मल जज़्बातों का ही अहसास था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हाँ मैंने सोच समझ कर बहुत झूठे वादे किये
हाँ मैंने अपनी महकती ख़ुशियों की ख़ुश्बू को
बेहद बेदर्दी से ख़ुदकुशी करके ग़मगीन किया
हाँ मैंने रोशन घर व परिवार में अन्धेरा किया
मैंने सब कुछ बहुत बेरहमी से बेकार कर दिया
जो मेरी नज़रों के सामने बहुत ही आबाद था
हाँ मैंने ख़ुशहाल घर को तबाह व बर्बाद किया

यह सब कुछ ग़लत करने के लिए
मैं बहुत बेचैन, मज़बूर व लाचार था
मैं दिलो-दिमाग़ से बेहद बेताब था
क्योंकि मुझे आपके पवित्र प्यार की
निर्मल भावनाओं का ही विश्वास था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हाँ मैंने अपने व्यापार में भी लापरवाही की
हाँ मैंने अपने दोस्तों को भी गुमराह किया
हाँ मैंने अपने इरादों से सबको धोखा दिया
हाँ मैंने दिन और रात ख़ुद को बेचैन किया
हाँ मैंने अपने स्वाभिमान से समझौता किया
हाँ मैंने सुबह-शाम को बेचैन व दुखी किया

यह सब कुछ ग़लत करने के लिए
मैं बहुत बेचैन, मज़बूर व लाचार था
मैं दिलो-दिमाग़ से बेहद बेताब था
क्योंकि मुझे आपके पवित्र प्यार की
तमन्ना व ख़्वाहिश का अहसास था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हाँ मैंने दुखदायी अनहोनी घटनाओं के
घटित करने के लिए सरासर झूठ बोले
हाँ मैंने वह सब कुछ बहुत ग़लत किया
जिससे मेरी शख़्सियत बेआबरू होती है

यह सब कुछ ग़लत करने के लिए
मैं बहुत बेचैन, मज़बूर व लाचार था
मैं दिलो-दिमाग़ से बेहद बेताब था
क्योंकि मुझे आप के पवित्र प्यार के
ख़्वाबों औ ख़यालों का अहसास था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

आप मेरे सपनों के लिए घर औ परिवार हो
दिल में ख़ुशियों और उमंगों का त्यौहार हो
आप के सुहाग के सिंदूर में पवित्र क़रार हो
माथे की बिन्दिया में मेरे मान का विचार हो

मेरे आशियाने में पायल की झन्कार हो
ख़ूबसूरत अहसास की हसीन बहार हो
सावन व बसन्त की रिमझिम फुहार हो
मेरे दिल में रोशन चराग़ सदाबहार हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मुहब्बत में यह सब कुछ बचाने के लिए
मैं बहुत बेक़रार, बेबस, बेचैन औ बेताब था
मैं दिल और दिमाग़ से बेहद मज़बूर था
क्योंकि मुझे आपके निर्मल-पवित्र प्यार में
इन्सानियत के जज़्बातों का अहसास था
इसलिए रिश्ते को महफ़ूज़ रखने के लिए
मैनें बहुत कुछ बुरा औ बहुत ग़लत किया

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मधुर मिलन की मुलाक़ात में यादगार हो
जीवन-साथी के सफ़र में दीदारे यार हो
मेरे ख़्वाबों औ ख़यालों में विसाले यार हो
मेरे अहसास और जज़्बात में तीमारदार हो

मेरी कविताओं में मधुर प्यार हो
मेरे तन और मन का संसार हो
मेरे बेक़रार दिल की पुकार हो
शजर के चिन्तन का विचार हो
तन्हाई में मिलन का ऐतबार हो
बेज़ुबान तसव्वुर का समाचार हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मुहब्बत में यह सब कुछ बचाने के लिए
मैं बहुत बेक़रार, बेबस, बेचैन औ बेताब था
मैं दिल और दिमाग़ से बेहद मज़बूर था
क्योंकि मुझे आपके निर्मल-पवित्र प्यार में
इन्सानियत के जज़्बातों का अहसास था
इसलिए रिश्ते को महफ़ूज़ रखने के लिए
मैंने बहुत कुछ बुरा औ बहुत ग़लत किया

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

निर्मल व पवित्र प्यार का अहसास था
आपकी बेइंतहा चाहत का आभास था
मेरे रोम-रोम में आप का विश्वास था
मेरे तन और मन में आपका प्रवास था

आपका प्यार दिल की बेचैनी का क़रार था
मेरा तन और मन आप के लिए बेक़रार था
मेरे चैन औ सुक़ून में आपका ही ऐतबार था
मेरा आशियाना आपके बिना बेहद बेज़ार था

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मुहब्बत में यह सब कुछ बचाने के लिए
मैं बहुत बेक़रार, बेबस, बेचैन औ बेताब था
मैं दिल और दिमाग़ से बेहद मज़बूर था
क्योंकि मुझे आपके निर्मल-पवित्र प्यार में
इन्सानियत के जज़्बातों का अहसास था
इसलिए रिश्ते को महफ़ूज़ रखने के लिए
मैनें बहुत कुछ बुरा औ बहुत ग़लत किया

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

इसलिए इतना बेहद ग़लत करने का
मुझे कोई अफ़सोस व मलाल नहीं है
इसलिए मैं ख़ुद अपनी ही निग़ाहों में
किसी के लिए भी गुनाहगार नहीं हूँ
किसी भी तरह से गुनाहगार नही हूँ

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

यह सब कुछ ग़लत करने के लिए
मैं बहुत बेचैन,मज़बूर व लाचार था
मैं दिलो-दिमाग़ से बेहद बेताब था
क्योंकि मुझे आपके पवित्र प्यार की
दिल की तमन्नाओं का अहसास था

मुहब्बत में यह सब कुछ बचाने के लिए
मैं बहुत बेक़रार, बेबस, बेचैन औ बेताब था
मैं दिल और दिमाग़ से बेहद मज़बूर था
क्योंकि मुझे आपके निर्मल-पवित्र प्यार में
इन्सानियत के जज़्बातों का अहसास था
इसलिए रिश्ते को महफ़ूज़ रखने के लिए
मैंने बहुत कुछ बुरा औ बहुत ग़लत किया।

मुहब्बत की ख़्वाहिशें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के संपूर्ण संसार

हम दोनों की हसीन मुहब्बत में
इस तरह का हमेशा ऐतबार रहे

ख़ुशहाल आशियाने में हम दोनों का प्यार एक साथ रहें
सुहावनी चाँदनी रातों में एक दूसरे की बाँहों में हाथ रहें
हर एक दिन सुहाग रात के हसीं ख़्वाबों के जज़्बात रहें
सुहाग की सेज पर सिंदूर व मंगलसूत्र के ख़यालात रहें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के संपूर्ण संसार

हमारे हसीन ख़्वाबों व ख़यालों में
इस तरह के अहसास औ जज़्बात
हमारे ख़ूबसूरत प्रेम की ज़िंदगी में
ख़ुशियाँ बेहिसाब और बेशुमार रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हम दोनों बेहिसाब मुहब्बत में
इस तरह से बेहद बेक़रार रहे

प्यार को महफ़ूज़ रखने को ज़माने से अदावत रहे
महबूब के लिए ख़ुद अपने आप से भी बग़ावत रहे
मुहब्बत के लिए दिलों में हमदर्दी और शराफ़त रहे
परेशानियों औ ज़रूरतों के वक़्त में इन्सानियत रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार

हमारे हसीन ख़्वाबों व ख़यालों में
इस तरह के अहसास औ जज़्बात
हमारे ख़ूबसूरत प्रेम की ज़िंदगी में
ख़ुशियाँ बेहिसाब और बेशुमार रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के संपूर्ण संसार

हम दोनों की बेशुमार मुहब्बत में
इस तरह से क़रार व इक़रार रहे

एक-एक पल में हमें सदियों का अहसास रहे
एक दूसरे के दिल में हर हाल में विश्वास रहे
चाहत, क़शिश और मिलन की मन में आस रहे
एक-दूजे को हर पल साथ रहने का आभास रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हमारे हसीन ख़्वाबों व ख़यालों में
इस तरह के अहसास औ जज़्बात
हमारे ख़ूबसूरत प्रेम की ज़िंदगी में
ख़ुशियाँ बेहिसाब और बेशुमार रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हमारे बेचैन तन और मन में
इस तरह प्यार का ख़ुमार रहे

हमारा प्यार इस ज़माने के लिए मिसाल रहे
पाक़ मुहब्बत की दास्ताँ दिलों में कमाल रहे
तन व मन पर प्यार की सतरंगी गुलाल रहे
वफ़ा व ऐतबार से रोशन प्रेम का ज़माल रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार

हमारे हसीन ख़्वाबों व ख़यालों में
इस तरह के अहसास औ जज़्बात
हमारे ख़ूबसूरत प्रेम की ज़िंदगी में
ख़ुशियाँ बेहिसाब और बेशुमार रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

एक दूसरे के प्यार औ मुहब्बत के
दिल में ऐसे ख़यालात बेशुमार रहे

निर्मल और पवित्र हमारे प्यार का सवाब रहे
अजर व अमर हमारी मुहब्बत का ज़वाब रहे
यादों से बेख़बर-बेख़ुदी में हम बेहिसाब रहे
इज़्जत और आबरू से प्यार का हिज़ाब रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार

हमारे हसीन ख़्वाबों व ख़यालों में
इस तरह के अहसास औ जज़्बात
हमारे ख़ूबसूरत प्रेम की ज़िंदगी में
ख़ुशियाँ बेहिसाब और बेशुमार रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हमारे दिल की पाक़ व निर्मल दुआओं में
परमपिता परमेश्वर का ऐसा चमत्कार रहे

परमपिता परमेश्वर पे हमें सम्पूर्ण ऐतबार रहे
आँगन में पूरी होती तमन्नाओं का संसार रहे
मनोकामनाओं में अजर-अमर हमारा प्यार रहे
हमारी ख़्वाहिशें व तमन्नाओं में दीदारेयार रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार

हमारे हसीन ख़्वाबों व ख़यालों में
इस तरह के अहसास औ जज़्बात
हमारे ख़ूबसूरत प्रेम की ज़िंदगी में
ख़ुशियाँ बेहिसाब और बेशुमार रहे।

---

1. अदावत=दुश्मनी **2.** ख़ुमार=मदहोश **3.** ऐतबार=विश्वास **4.** ज़माल=सौन्दर्य **5.** फलसफ़ा=चिन्तन **6.** बेशुमार=अनगिनत, **7.** सवाब=पुण्य **8.** हिज़ाब=पर्दा **9.** दीदारे यार=महबूब के दर्शन।

मुहब्बत मेरे लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरी ज़िन्दगी के लिये क्या नहीं हो

रिश्तों में दोस्ती के तमाम उम्र के क़रार हो
जीवन-साथी के लिये घर और परिवार हो
माँ की ममता के लिये बच्चे का दुलार हो
पिता की तरह से हर हाल में जिम्मेदार हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरी ज़िन्दगी में सुक़ून के इक़रार हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरी ज़िन्दगी के लिये क्या नहीं हो

चाँद औ चकोर के मिलन का क़रार हो
चमन में महकते हुये फूलों की बहार हो
सागर में दरिया के वज़ूद का संसार हो
दिल और दिमाग़ में प्राणों का संचार हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार

तुम मेरी ज़िन्दगी में
ख़ुशियों के इज़हार हो।

प्यार की अहमीयत

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
थोड़े से ऐतबार व वफ़ा से ही तो
ऐसा मधुर और ख़ूबसूरत प्यार मिलेगा

ख़ुशहाल मौसम का संसार मिलेगा
मधुर मिलन में विसाले यार मिलेगा
ख़ुशहाल जीवन का आधार मिलेगा
सच हुये सपनों को आकार मिलेगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
थोड़ी सी समझदारी से ही तो
ऐसा मधुर व हसीन प्यार मिलेगा

बदहाल ज़िन्दगी को सुधार मिलेगा
सात फेरे लेने का अधिकार मिलेगा
ख़ुशियों का प्यारा समाचार मिलेगा
मुलाक़ात में सुकूँ का करार मिलेगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
थोड़े से प्यारे अहसास से ही तो
सारी ज़िन्दगी में ऐसा मधुर प्यार मिलेगा

सुहाग-रात का मौसम ख़ुशगवार मिलेगा
मान-सम्मान के लिये घर-परिवार मिलेगा
ज़माने के रस्मो-रिवाज़ों में शुमार मिलेगा
ऐतबार में करवा चौथ का त्यौहार मिलेगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
थोड़े से ख़्वाबो-खयालों से ही तो
तन और मन में ऐसा मधुर प्यार मिलेगा

ख़ुशियों से तन औ मन में निखार मिलेगा
सजने और संवरने के लिये शृंगार मिलेगा
रिश्ते की ख़ुशहाली का तीमारदार मिलेगा
ख़ूबसूरत तसव्वुर में हमेशा आकार मिलेगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
थोड़े से प्यार के जज़्बात से ही तो
ऐसा मधुर और ईमानदार प्यार मिलेगा

मधुर संगीत का मन में सितार मिलेगा
सुनहरे सपनों जैसा राजकुमार मिलेगा
दुख-सुख में जीवन को आधार मिलेगा
हर-पल साथ रहने का विचार मिलेगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
थोड़े से प्यार के जज़्बात से ही तो
ऐसा समझदार और मधुर प्यार मिलेगा

चाहत में दीदार-ए-यार मिलेगा
हसीं सफ़र का मददगार मिलेगा
मिलन का वक़्त यादगार मिलेगा
सारी ज़िन्दगी का क़रार मिलेगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
थोड़े से प्यार में ऐतबार से ही तो
ऐसे पवित्र अहसास का प्यार मिलेगा

विश्वास के लिये वर माला का हार मिलेगा
सात वचनों के बन्धन का तलबगार मिलेगा
चाहत व क़शिश में हसीन इन्तज़ार मिलेगा
मनोकामनाओं में सावन का सोमवार मिलेगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
थोड़े से ख़ूबसूरत प्यार से ही तो
ऐसे चैन व सुक़ून का मधुर प्यार मिलेगा

मुहब्बत के अहसास को क़रार मिलेगा
दिलों के जज़्बातों को इज़हार मिलेगा
मुश्क़िल वक़्त के लिये ऐतबार मिलेगा
मुलाक़ात के लिये दिल बेक़रार मिलेगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
थोड़े से मधुर प्यार से ही तो
ऐसा निर्मल और पवित्र प्यार मिलेगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
थोड़े से मधुर प्यार से ही तो
ऐसा निर्मल और पवित्र प्यार मिलेगा।

---

1. इजहार=कहना **2.** ऐतबार=विश्वास **3.** विसाले यार=महबूब का मिलन।

मुहब्बत का ऐतबार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तन और मन से बिना वज़ह
मत हो इस तरह से इतना परेशान

हर हाल में एक-दूजे पर विश्वास होगा
एक-दूजे में ख़ुश करने का प्रयास होगा
इश्क़ के ताने-बाने में शुद्ध कपास होगा
हमारी क़ोशिशों से ज़माना निराश होगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
दिल औ दिमाग़ से बिना वज़ह
मत हो इस तरह से इतना बेक़रार

दो बदन होकर रहेंगे एक ज़ान
ज़माने में होगा हमारा सम्मान
हमारे प्यार का ऐसा है ईमान
दीवानों के दिल में होगी शान

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मत हो इस तरह से इतना व्याकुल
हताश, निराश, परेशान, हैरान और उदास

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
दिल औ दिमाग़ से बिना वज़ह
मत हो इस तरह से इतना बेज़ार

अपनी मुहब्बत पे करो ऐतबार
अच्छे वक़्त का करो इन्तज़ार
हमारे जीवन में आयेगी बहार
हमारा प्रेम महकेगा सदाबहार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तन और मन से बिना वज़ह
मत हो इस तरह से इतना लाचार

मेरे दिल औ दिमाग़ की आत्मा
मेरे दिल की दुआ के परमात्मा
गिले और शिक़वे दूर करके ही
अपनी अनाओं का करेंगे ख़ात्मा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मत हो इस तरह से इतना व्याकुल
हताश, निराश, परेशान, हैरान और उदास

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ख़्वाबों व ख़यालों में बिना वज़ह
मत हो इस तरह से इतना हताश

हमारी मुहब्बत हमदर्दी का मयख़ाना है
एक-दूजे को वफ़ा का जाम पिलाना है
प्यार में एक दूसरे का साथ मस्ताना है
ख़ुशियों से आबाद हमारा आशियाना है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
रस्मों व रिवाज़ों से बिना वज़ह
मत हो इस तरह से इतना उदास

सितमग़र व ज़ालिम ऐसा ज़माना है
मुहब्बत के लिये हर कोई बेगाना है
हमें वादे और इरादों को दिखाना है
निर्मल और पवित्र प्यार में समाना है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मत हो इस तरह से इतना व्याकुल
हताश, निराश, परेशान, हैरान और उदास

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
दिल औ दिमाग़ से बिना वज़ह
मत हो इस तरह से इतना हताश

वीणा का मधुर साज़ व संगीत होगा
जज़्बात और अहसास का गीत होगा
हमारी बेशुमार चाहत और क़शिश में
हर वक़्त साथ में मन का मीत होगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तन और मन से बिना वज़ह
मत हो इस तरह से इतना निराश

ख़ुद को इतना मत करो बेक़रार
बेआबरू न हो जाये हमारा प्यार
रस्म व रिवाज़ से हम हैं लाचार
एक दिन ज़रूर होगा चैनो-क़रार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मत हो इस तरह से इतना व्याकुल
हताश, निराश, परेशान, हैरान और उदास

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मत हो इस तरह से इतना बेज़ार
मत हो इस तरह से इतना हताश

मत हो इस तरह से इतना उदास
मत हो इस तरह से इतना निराश
मत हो इस तरह से इतना लाचार
मत हो इस तरह से इतना बेक़रार
मत हो इस तरह से इतना परेशान

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार।

राज़-ए-मुहब्बत

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ख़्वाहिशें शबाब और हुस्न की
जाम पर जाम तो हो जाती हैं
मगर दौलते बदन खर्च हो कर
हसरते दिल बाक़ी रह जाती हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

समन्दर में मौज़ दर मौज़ लहरें
तूफ़ान में तो बदल ही जाती हैं
क़श्तियाँ साहिल पे आ जाती है
ज़ीस्त तो मल्लाहों की जाती हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

महकते हुये गुलशन में लाज़मी है
कलियों का गुल हो कर महकना
मगर लुत्फ़-अन्दोज़ में बागवाँ की
ताक़त व जुनून ख़त्म हो जाती हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

शानो-शौक़त नाज़ और अदा से
शौहरते महफ़िल में चाहत रोशन
मगर महकते जमाल औ नूरे शमा
ज़ाँ गुसल-ए-परवाना हो जाती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

जामे-शराब कभी रज़ामंदी से
तो कभी बेमज़ा ज़बरदस्ती से
हर हालात में चर्चे रुसवाई से
शराब की तो आबरू जाती हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

न दिल की लगी है नहीं बेबसी है
अब तो प्यार में हर शै तिजारत हैं
मुहब्बत में मुनाफ़े से सदा-ए-दिल
तराजू-ए-दिमाग़ में तोली जाती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सीरत, इल्म औ हुनर तो फ़ानी हैं
मगर शख़्सियत-ए-हम सफ़र में
चेहरे पर चमक ज़ेब में ख़नक से
हसीना की कमर में बाहें जाती हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

अमावस में चाँद औ चकोर है
मुग़ालते औ गुमान में 'साथी' हैं
मगर इब्तिदा-ए-शबे विसाल
चाँद-ए-निकाह मानी जाती है।

---

1. हुस्न=सुन्दरता 2. गुल=फूल **3.** लुत्फ़-अंदोज़=रस्सास्वादन **4.** हिम्मत-ए-परवाना=भँवरे की हिम्मत **5.** जमाल=सौन्दर्य **6.** नूर-ए-शमा=शमा की रोशनी **7.** गुसल-ए-परवाना=पंतगों की जान लेना **8.** साहिल=किनारा **9.** ज़ीस्त=ज़िन्दगी **10.** रुसवाइयाँ=बदनामी **11.** शै=चीज़ या वस्तु **12.** तिजारत=व्यापार **13.** सदा-ए-दिल=दिल की आवाज़ **14.** सीरत=गुण **15.** इल्म=ज्ञान **16.** फ़ानी=व्यर्थ **17.** शख़्सियत=व्यक्तित्व **18.** मुगालते=असमन्जस **19.** हुनर=कला **20.** गुमान=भ्रम **21.** इब्तिदा-ए-शबे विसाल=मिलन की रात्रि की शुरूआत 22. चाँद-ए-निकाह=शादी रूपी चाँद।

रियाज़

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

आहिस्ता-आहिस्ता तन्हा गलन रातें
बर्फ़ की परत दर परत जमा देती हैं
धीरे-धीरे गर्मी की अगन और तपन
महकते चमन को सहरा बना देती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
मुहब्बत के अहसास को हमेशा बनाये रखना

बेक़ाबू हवायें लगातार चलते-चलते
ख़िज़ा की आँधियाँ बन ही जाती हैं
समंदर में मौज़-दर-मौज़ तेज़ लहरें
जलज़ले व तूफ़ान में बदल जाती हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
मुहब्बत के जोशो-जुनून को बनाये रखना

झिलमिलाते हुये जुगनुओं की रोशनी
चाँद की शीतल चाँदनी बन जाती है
अन्धेरी रातों में चराग़ से चराग़ जल
रोशनी नूर-ए-आफ़ताब हो जाती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
मुहब्बत के चराग़ को हमेशा जलाये रखना

क़तरा-क़तरा सुबह की शीतल शबनम
बंजर सूखी ज़मीन को नम कर देती है
झरनों की लहरों से रवानी बहते-बहते
दरिया व सागर में तब्दील हो जाती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
यादों को रोम-रोम में बसाये रखना

बेबस जुदाई की आहें सुलगते-सुलगते
ग़म औ तन्हाइयों की आग हो जाती है
विरह में तड़प-तड़पकर सदा-ए-दिल
दीवान-ए-ग़ज़ल औ नज़्म हो जाती हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
मुहब्बत के अक़्स को दिल में सजायें रखना

इन्तज़ार में लम्हें गुज़रते-गुज़रते
यादगार मुलाक़ात हो ही जाती है
पूछते-पूछते सफ़र में राहगीर को
मंज़िल की तलाश हो ही जाती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
मधुर मिलन में पलकों को बिछाये रखना

पत्थर की इबादत करते-करते
ख़ुदा की सूरत दिख जाती है
पत्थरों को उछालते-उछालते
आसमाँ में निशानी हो जाती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मुहब्बत को आराधना बनाये रखना

वक़्त बेवक़्त दुश्मनों से मिलते-मिलते
ज़िंदा दिल से दोस्ती हो ही जाती है
मुलाक़ात में नज़र को मिलाते-मिलाते
मुहब्बत में निग़ाहें चार हो ही जाती हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
मुहब्बत के रिश्ते को दिल में समाये रखना

मुसलसल रियाज़ की क़ोशिश से
हर-मुश्क़िल आसान हो जाती है
मधुर मिलन के जज़्बात में रहकर
ज़िन्दगी ख़ूबसूरत हो ही जाती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
मुहब्बत के अहसास को दिल में बनाये रखना।

---

1. सहरा=रेगिस्तान **2.** माहताब=चाँद **3.** दरिया=नदी **4.** नूरे आफ़ताब=सूरज का प्रकाश **5.** शबनम=ओस **6.** चश्मा= झरना **7.** रवानी=धारा **8.** तब्दील=बदलना **9.** रियाज़=अभ्यास **10.** सदा-ए-दिल=दिल की आवाज़ **11.** मुसलसल =निरन्तर।

रिश्तों का बन्धन

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
जीवन में रिश्तों का अहसास ऐसा होता है

मोहमाया के जाल मे फँसा होता है
प्यार औ मुहब्बत से आबाद होता है
नफ़रत औ रंज़िश से तबाह होता है
जज़्बातों की क़द्र से परवान होता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार
दिल में रिश्तों का बन्धन ऐसा होता है

ज़रूरत से मज़बूत बनता है
सम्बन्धों से अर्थ बदलता है
धन-दौलत से पहचानता है
जज़्बात को दफ़्न करता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
रिश्तों के बन्धन और अहसास में
तन और मन को ऐसा आभास होता है
दिल और दिमाग़ को ऐसा महसूस होता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार
रिश्तों में दिल को ऐसा महसूस होता है

अपनों से ज़लालत में बेग़ाना होता है
प्यार और मुहब्बत से आशना होता है
चाहत औ क़शिश से दीवाना होता है
मुसीबत के वक़्त में दोस्ताना होता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार
मुहब्बत के रिश्तों का आभास ऐसा होता है

रिश्तों में जब ख़ूबसूरत अहसास होता है
मुहब्बत में तब जा कर विश्वास होता है
घर और परिवार के लिये प्रयास होता है
जन्मों-जन्मों के साथ का प्रवास होता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
रिश्तों के बन्धन और अहसास में
तन और मन को ऐसा आभास होता है
दिल और दिमाग़ को ऐसा महसूस होता है।

समझदार प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अब तुम्हें समझदार होना ही होगा
ऐसे सवालों के जवाब देने के लिये

इज्ज़त औ आबरू महफ़ूज़ रखने के लिये
इन्सानियत और हमदर्दी से जीने के लिये
अपनी अहमीयत को बनाये रखने के लिये
परिवार औ ख़ुद को बचाये रखने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अब तुम्हें समझदार होना ही होगा
अपने दीन और ईमान बनाये रखने के लिये

नापाक़ हरक़त से बचने के लिये
दुनियादारी को समझने के लिये
हकीक़त के साथ जीने के लिये
अपनों से इन्साफ़ करने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अब तुम्हें समझदार होना ही होगा
इन्सानियत के साथ ज़िन्दा रहने के लिये

प्यार का अहसास करने के लिये
ग़लतियों को माफ़ करने के लिये
दिल को पाक़ साफ करने के लिये
झूठ व सच में फ़र्क़ करने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अब तुम्हें समझदार होना ही होगा
अपने रिश्तों को अजर-अमर करने के लिये

नादानियों को भूलने के लिये
मन को निर्मल करने के लिये
तन को पवित्र करने के लिये
जज़्बात को समझने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अब तुम्हें समझदार होना ही होगा
ऐसे बुरे हालातों को दूर करने के लिये

बेवफ़ाई का क़त्ल करने के लिये
गिले शिक़वे ख़त्म करने के लिये
शख़्सियत की क़द्र करने के लिये
मान व सम्मान को बढ़ाने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अब तुम्हें समझदार होना ही होगा
ऐसे जज़्बातों को ख़त्म करने के लिये

शक़ और शिक़ायतों से बचने के लिये
तौहीन और ज़लालत से बचने के लिये
ख़ुदग़र्ज़ी औ बेवफ़ाई से बचने के लिये
वक़्त की नज़ाकत को समझने के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अब तुम्हें समझदार होना ही होगा
अब तुम्हें समझदार होना ही होगा।

शजर में मुहब्बत

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

चाहत और क़शिश के बीज
जब दिल में अंकुरित होते हैं
फिर अहसासों के गुलशन में
रिश्तों के शजर जन्म लेते हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मधुर-मिलन की मुलाक़ातों के
पोषण से फलते और फूलते हैं
विश्वास जज़्बात व अहसास से
महकते आशियाँ आबाद होते हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मधुर यादों से दिल दिमाग़ में
प्यार के शजर आबाद होते हैं
निर्मल और पवित्र अहसास से
मुहब्बत के शजर घने होते हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

जज़्बातों से मुहब्बतों के शजर
सत-रंगी और हरियाले होते हैं
प्रेम में एक-दूजे की ज़रूरत से
मुहब्बत के गुल खिल जाते हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

एक-दूजे की वफ़ा ऐतबार से
मुहब्बत के शजर महकते हैं
घर औ परिवार हो जाने से
मुहब्बत का छोटा सा शजर
बरगद के जैसा हो जाता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

पाक़ इबादत औ अक़ीदत से
प्यार का निर्मल-पवित्र शजर
दुआओं मुरादों मनोकामना से
पीपल जैसे पाक़ हो जाता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

दिली मुहब्बत में रिश्ते की
हकीक़त औ ईमानदारी से
मुहब्बतों का मासूम शजर
बबूल के जैसे हो जाता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मुहब्बत से दिलो-दिमाग़ में
एक-दूजे की समझदारी से
वफ़ा से मुहब्बतों का शजर
आम की तरह हो जाता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ऐतबार को दिल में रखकर
पल-पल की ईमानदारी से
मुहब्बत का गुणवान शजर
जामुन के जैसे हो जाता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

महकते हुये घर का आँगन
दिलो-दिमाग़ में अहसास से
मुहब्बत का ख़ूबसूरत शजर
गुलमोहर जैसा हो जाता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तन्दरूस्त तन और मन का
दिल के तसव्वुर हो जाने से
मुहब्बतों का औषधीय शजर
आँवले का शजर हो जाता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

दिल की साँसे और धड़कनों से
मुहब्बत का जीवन दायनी शजर
स्वस्थ व निरोगी जीवन के लिए
नीम के शजर जैसा हो जाता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मुहब्बत के अहसास, विश्वास
जज़्बात, ज़रूरत व मुलाक़ात
मधुर-मिलन की हसी यादों
वादों-इरादों के दीनो ईमान
रिश्ते की वफ़ा व ईमानदारी
आराधना, उपासना व साधना
प्रार्थना, सच व समझदारी से
मुहब्बतों के रिश्तों का शजर

ख़ुशियों से महकता आशियाँ
सावन जैसा हरा-भरा होकर
मुहब्बत का सतरंगी गुलशन
सदाबहार आबाद हो जाता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार।

सिर्फ़ तुम हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

जब ग़म हो तो तुम हो
जब ख़ुशी हो तो तुम हो
जब भी मेरे पास तुम हो
तब सिर्फ़ व सिर्फ़ तुम हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हर वक़्त मेरी साँसों में सिर्फ़ तुम हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरे अंग अंग में भी तुम हो
मेरे रोम-रोम में भी तुम हो
मेरे तन और मन में तुम हो
मेरे दिलो-दिमाग़ में तुम हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे सम्पूर्ण जीवन में सिर्फ़ तुम हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सुनहरे पलों के ख़्वाब तुम हो
हसीन पल के ख़याल तुम हो
मेरे सवालों के जवाब तुम हो
मेरी यादों का हिसाब तुम हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे सम्पूर्ण विचारों में सिर्फ़ तुम हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरे प्राणों में जीवन का संचार तुम हो
मेरी रग-रग में लहू का प्रवाह तुम हो
मेरे दिल की धड़कन के सबब तुम हो
मेरी साँसों का वजूद भी सिर्फ़ तुम हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे ज़िन्दा होने की वजह सिर्फ़ तुम हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी बेचैनियों का क़रार तुम हो
मेरी ख़ुशियों के इज़हार तुम हो
मेरी ख़्वाहिशों के अरमाँ तुम हो
मेरी इबादत की अजान तुम हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरी मुहब्बत का ऐतबार सिर्फ़ तुम हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरे जीवन के हर त्यौहार तुम हो
मेरे आँगन के घर-परिवार तुम हो
मेरी हर उम्मीदों के चराग़ तुम हो
मेरी मंज़िल का हर सफ़र तुम हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे दीनो ईमान के इक़रार सिर्फ़ तुम हो।

सुख़न के अरमान

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी यह ख़्वाहिश और तमन्ना नहीं है
मेरी यह आरज़ू मन्नत भी नहीं है कि
मेरी शायरी इल्म व अदब की बज़्म में
सुख़नवरों की महफ़िल में मयार से हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी शायरी महफ़िल में पायेदार भी हो
वह मेरी रुहानी रुमानियत शायरी पर
दिल से तबादला-ए-ख़यालात कर के
अपने बेशक़ीमती वक़्त को बर्बाद न करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी तो सिर्फ़ इतनी सी इल्तज़ा
और ख़ुदा से पाक़ दुआयें है कि
मेरी शायरी में मेरे महबूब के ही
ख़ूबसूरत चाहत के ख़यालात हों

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी शायरी में मेरे महबूब के
हसीन और पाक़ जज़्बात हों
मेरे गीत-ग़ज़ल के लफ़्ज़ों में
मेरे प्यार की ही मुलाक़ातें हों

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरे शेरों और अशआरों में
महबूब के ही सवालात हों
बेक़रार दिल से गुफ़्तगू में
मुहब्बत के ही जज़्बात हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी तो सिर्फ़ इतनी सी इल्तज़ा
और ख़ुदा से पाक़ दुआयें हैं कि
मेरी शायरी में मेरे महबूब के ही
निर्मल-पवित्र प्रेम के अहसास हों

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी शायरी में मेरे महबूब के ही
दिल और दिमाग़ में विश्वास हो
रोम-रोम में प्यार का आभास हो
तन-मन से मिलन का प्रवास हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी यह ख़्वाहिश और तमन्ना नहीं है
मेरी यह आरज़ू मन्नत भी नहीं है कि
मेरी शायरी इल्म व अदब की बज़्म में
सुख़नवरों की महफ़िल में मयार से हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी शायरी महफ़िल में पायेदार भी हो
वह मेरी रुहानी रुमानियत शायरी पर
दिल से तबादला-ए-ख़यालात कर के
अपने बेशक़ीमती वक़्त को बर्बाद न करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी तो सिर्फ़ इतनी सी इल्तज़ा
और ख़ुदा से पाक़ दुआयें है कि
मेरी शायरी में मेरे महबूब के ही
चैन व सुकूँ का दिली क़रार हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी शायरी में मेरे महबूब का ही
मधुर मिलन का बेसब्र इंतज़ार हो
ताउम्र के लिये उसका ऐतबार हो
तन और मन का संपूर्ण संसार हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी तो सिर्फ़ इतनी सी इल्तज़ा
और ख़ुदा से पाक़ दुआयें है कि
मेरी शायरी में मेरे महबूब के ही
पवित्र प्रेम गीतों की दास्तान हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी शायरी में मेरे महबूब के ही
दिल के जज़्बातों की ज़ुबान हो
ख़ुदा से उपासना की अजान हो
निर्मल-पवित्र प्यार के अरमान हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी यह ख़्वाहिश और तमन्ना नहीं है
मेरी यह आरज़ू मन्नत भी नहीं है कि
मेरी शायरी इल्म व अदब की बज़्म में
सुख़नवरों की महफ़िल में मयार से हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी शायरी महफ़िल में पायेदार भी हो
वह मेरी रुहानी रुमानियत शायरी पर
दिल से तबादला-ए-ख़यालात कर के
अपने बेशक़ीमती वक़्त को बर्बाद न करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी तो सिर्फ़ इतनी सी इल्तज़ा
और ख़ुदा से पाक़ दुआयें है कि
मेरी शायरी में मेरे महबूब के ही
पवित्र तन-मन की आराधना हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरे गीत-ग़ज़ल में मेरे महबूब के ही
निर्मल दिलो-दिमाग़ की प्रार्थना हो
सच होते हुये सपनों की साधना हो
ख़्वाबों औ ख़यालों की उपासना हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी तो सिर्फ़ इतनी सी इल्तज़ा
और ख़ुदा से पाक़ दुआयें है कि
मेरे गीत और ग़ज़लों को पढ़कर
बेक़रार महबूब में करार आ जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी शायरी सुनकर मेरे महबूब के
दामन में ख़ुशी की बहार आ जाये
हाथों में वरमाला का हार आ जाये
सुहाग की सेज का प्यार आ जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी यह ख़्वाहिश और तमन्ना नहीं है
मेरी यह आरज़ू मन्नत भी नहीं है कि
मेरी शायरी इल्म व अदब की बज़्म में
सुख़नवरों की महफ़िल में मयार से हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी शायरी महफ़िल में पायेदार भी हो
वह मेरी रुहानी रुमानियत शायरी पर
दिल से तबादला-ए-ख़यालात कर के
अपने बेशक़ीमती वक़्त को बर्बाद न करें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी तो सिर्फ़ इतनी सी इल्तज़ा
और ख़ुदा से पाक़ दुआयें है कि
मेरे शेर औ सुख़न को पढ़कर के
करवा चौथ का त्यौहार आ जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरे महबूब के दिल और दिमाग़ में ही
हरियाले सावन का सोमवार आ जाये
माँग में सिन्दूर का अधिकार आ जाये
सात फेरों से घर औ परिवार आ जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी तो सिर्फ़ इतनी सी इल्तज़ा
और ख़ुदा से पाक़ दुआयें है कि
मेरी शायरी के दीवान महबूब के
बेबस-लाचार दिल की पुकार हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरी तो सिर्फ़ इतनी सी इल्तज़ा
और ख़ुदा से पाक़ दुआयें है कि
मेरे गीत और ग़ज़लों को सुनकर
महबूब के दिल में इतना प्यार हो

विरह की व्याकुल वेदना में इन्तज़ार हो
मधुर मिलन की मुलाक़ातों का प्यार हो
महबूब के तन-मन का सम्पूर्ण संसार हो
शजर के चिन्तन जैसा निर्मल विचार हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार।

तुम कहाँ चले गये हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम इस तरह से कहाँ चले गये हो
तुम्हारे बिना ज़िन्दगी के ऐसे हालात है

मेरा तन औ मन बहुत बेचैन है
मेरा दिल औ दिमाग़ बेक़रार है
मन विरह-वेदना से व्याकुल है
मेरे प्रेम गीत बहुत ही उदास है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम इस तरह से कहाँ चले गये हो
तुम्हारे बिना जीवन में ऐसे सवालात है

आँगन में जवान मौत सा मुक़ाम है
तुम्हारे बिना अब जीना भी हराम है
ख़ुशहाल सफ़र का तो पूर्णविराम है
आँसुओं की बरसात अब बेलगाम है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह से कहाँ चले गये हो
लौट आओ मेरे चैनों-सुकून के लिये
लौट आओ मुहब्बत के विश्वास के लिये
लौट आओ निर्मल और पवित्र प्यार के लिये
लौट आओ हमारे अजर और अमर प्यार के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम इस तरह से कहाँ चले गये हो
तुम्हारे बिना तन-मन के ऐसे हालात हैं

यह संसार लगता अब शमशान है
मेरा महकता आशियाना वीरान है
तुम्हारे बिना ज़िन्दा तन बेजान है
ख़ुशियों का चमन भी सुनसान है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम इस तरह से कहाँ चले गये हो
तुम्हारे बिना ज़ेहन में ऐसे ख़यालात हैं

दामन में हर तरफ मौत का सामान है
दिन व रात मिलन के बिना हैरान है
सुबह औ शाम मायूसी से परेशान है
दफ़्न होते मेरे ख़्वाबों के अरमान है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह से कहाँ चले गये हो
लौट आओ मेरे चैनो-सुकून के लिये
लौट आओ मुहब्बत के विश्वास के लिये
लौट आओ निर्मल और पवित्र प्यार के लिये
लौट आओ हमारे अजर और अमर प्यार के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम इस तरह से कहाँ चले गये हो
तुम्हारे बिना मेरी ज़िन्दगी हवालात है

मेरे ख़यालों में नहीं रहता कोई और है
मेरी अधजगी आँखों में रतजगी भोर है
दिल और दिमाग़ चाहत में चितचोर है
तन व मन में मिलन का नाचता मोर है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम इस तरह से कहाँ चले गये हो
तुम्हारे बिना मेरे मन में ऐसे सवालात हैं

तन्हाईयों में तुम्हारी यादों का शोर है
लगातार बहते हुये अश्क़ों का दौर है
विचलित मन पर चलता नहीं जोर है
बिन माँझी क़श्ती का न कोई छोर है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह से कहाँ चले गये हो
लौट आओ मेरे चैनो-सुक़ून के लिये
लौट आओ मुहब्बत के विश्वास के लिये
लौट आओ निर्मल और पवित्र प्यार के लिये
लौट आओ हमारे अजर और अमर प्यार के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम इस तरह से कहाँ चले गये हो
तुम्हारे बिना मेरे दिल में ऐसे जज़्बात हैं

दर्द और ग़म के गीतों से लिखा दीवान है
आपके बिना ख़ुदकुशी का पूरा इत्मीनान है
बदहाल ज़िन्दगी चन्द दिनों की मेहमान है
तन्हाई औ जुदाई से आबाद मेरा जहान है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह से कहाँ चले गये हो
लौट आओ मेरे चैनो-सुक़ून के लिये
लौट आओ मुहब्बत के विश्वास के लिये
लौट आओ निर्मल और पवित्र प्यार के लिये
लौट आओ हमारे अजर और अमर प्यार के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम तस तरह से कहाँ चले गये हो
तुम्हारे बिना ज़िन्दगी के ऐसे सवालात हैं

तुम्हारे बिना अधूरा मेरा संसार है
मेरा तन और मन बेहद बेज़ार है
दिल और दिमाग़ बहुत बेक़रार है
प्रेम की क़श्ती तूफ़ाँ में मझधार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह से कहाँ चले गये हो
लौट आओ मेरे चैनो-सुक़ून के लिये
लौट आओ मुहब्बत के विश्वास के लिये
लौट आओ निर्मल और पवित्र प्यार के लिये
लौट आओ हमारे अजर और अमर प्यार के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सर्म्पूण संसार
अतिशिघ्र लौट आओ...
अतिशिघ्र लौट आओ...।

तुम क्या नहीं हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे अंग-अंग से एक सार हो कर
दिलो-दिमाग़ में अजर-अमर हो कर
ख़यालों में चाहत का आभास हो कर
रोम-रोम में प्यार का अहसास हो कर
तन व मन से निर्मल और पवित्र हो कर
मधुर मिलन की मुलाक़ात में साकार हो कर

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे प्यार के लिये क्या नहीं हो

तुम मेरे लिये बसन्त के मधुमास हो
जज़्बातों व ज़रूरतों के अहसास हो
दिल औ दिमाग़ में पूर्ण विश्वास हो
मिठास और क़शिश का आभास हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे प्यार के लिये क्या नहीं हो

चाहत और मिलन की आस हो
मेरे तन-मन के लिये प्यास हो
तुम मेरे अरमानों का प्रवास हो
ख़्वाबों की ताबीर का प्रयास हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे प्यार के लिये क्या नहीं हो
तुम मेरी ज़िन्दगी के लिये सब कुछ हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे प्यार के लिये क्या नहीं हो

हसीन रात की महकती रातरानी हो
कल-कल करते झरने की रवानी हो
पूनम के चाँद की शीतल चाँदनी हो
निर्मल औ पवित्र प्रेम की कहानी हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे प्यार के लिये क्या नहीं हो

मेरे आँगन में भँवरे का गुंजन हो
शरद ऋतु में ऊष्मा का मनन हो
शजर के जैसे सुहावना चिंतन हो
मन की वीणा का मधुर मंथन हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे अंग अंग से एक सार हो कर
दिलो-दिमाग़ में अजर-अमर हो कर
ख़यालों में चाहत का आभास हो कर
रोम-रोम में प्यार का अहसास हो कर
तन व मन से निर्मल और पवित्र हो कर
मधुर मिलन की मुलाक़ात में साकार हो कर

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे प्यार के लिये क्या नहीं हो

हताशा और निराशा के वक़्त की आशा हो
मेरी रग-रग में बहती हुई प्रेम की धारा हो
मेरे गीत व कविता की साकार कल्पना हो
शजर के सफ़र का मुक़म्मिल फलसफ़ा हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे अंग-अंग के लिये सब कुछ हो

ओह! मेरे मधुर प्यार,
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे प्यार के लिये क्या नहीं हो

ख़ुश्बू की तरह ख़ुशी की महक हो
हरियाली की तरह आबाद चमन हो
तुम मेरे लिये जीवन का मक़सद हो
मुलाक़ात और मिलन की क़शिश हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे अंग-अंग के लिये सब कुछ हो
तुम मेरे दिल में प्यार के लिये सब कुछ हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे अंग अंग से एक सार हो कर
दिलो-दिमाग़ में अजर-अमर हो कर
ख़यालों में चाहत का आभास हो कर
रोम-रोम में प्यार का अहसास हो कर
तन व मन से निर्मल और पवित्र हो कर
मधुर मिलन की मुलाक़ात में साकार हो कर

तुम मेरे मन की वीणा के संगीत हो
मेरे सतरंगी जीवन के इन्द्रधनुष हो
मेरे सुनहरे सपनों का स्वप्नफल हो
मेरे दिल में खिलता हुआ कमल हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे प्यार के लिये क्या नहीं हो

मेरी सांसों में प्राणों का संचार हो
तुम मेरे लिये सुक़ून का क़रार हो
तुम मेरे दिली प्यार की बहार हो
तुम मेरी तमन्नाओं का आकार हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे प्यार लिये क्या नहीं हो
तुम मेरे रोम-रोम के लिये सब कुछ हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे अंग-अंग से एक सार हो कर
दिलो-दिमाग़ में अजर-अमर हो कर
ख़यालों में चाहत का आभास हो कर
रोम-रोम में प्यार का अहसास हो कर
तन व मन से निर्मल और पवित्र हो कर
मधुर मिलन की मुलाक़ात में साकार हो कर

तुम रग-रग में बहती हुई धारा हो
मेरे गीत व कविता की कल्पना हो
मेरे सुनहरे सपनों का फलसफ़ा हो
मेरे प्यार के समंदर की सफ़ीना हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तुम मेरे ईमान के लिये इबादत हो
ज़िन्दगी के सफ़र की ज़ियारत हो
प्रेम के लिये ज़माने से बग़ावत हो
बेख़ुदी में अपने आपसे अदावत हो

ओह! मेरे मधुर प्यार,
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे प्यार के लिये क्या नहीं हो

मेरे सतरंगी जीवन का इन्द्रधनुष हो
मेरे दिल में खिलता हुआ कमल हो
सागर मे हिलोरें लेती हुई लहर हो
चमन में परिन्दों की चहचहाहट हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे अंग अंग के लिये सब कुछ हो

ओह! मेरे मधुर प्यार,
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे प्यार के लिये क्या नहीं हो

मेरी सांसों में प्राणों का संचार हो
रोशनी से जगमग सुन्दर शाम हो
मेरे अरमानों की सम्पूर्ण तलाश हो
सपनों के स्वप्नफल का प्रयास हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे पवित्र प्यार के लिये सब कुछ हो।

उन्हें क्या ख़बर है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

महफ़िल में तो हँसते हैं
तन्हाईयों में फिर रोते हैं
आपके लिये ही जीते हैं
आपके लिये ही मरते हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
यह आपको कैसे व कहाँ ख़बर है

आपके लिए ही दर्द सहते हैं
आपके लिए ग़मों को पीते हैं
आपके लिये ही तो सजते हैं
आपके लिये ही तो सँवरते हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
यह आपको कैसे व कहाँ ख़बर है

दिन में तो बेचैन रहते हैं
शाम को उदास रहते हैं
जुदाई में तड़पा करते हैं
मुलाक़ातों को तरसते हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
यह आपको कैसे व कहाँ ख़बर है

आपकी यादों में मशरूफ़ रहते हैं
दुनियादारी से तो बेख़बर रहते हैं
आपकी इबादत में ही तो रहते हैं
इश्क़ को ही ज़ियारत समझते हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
यह आपको कैसे व कहाँ ख़बर है

मुहब्बत की ख़ुमारी में रहते हैं
दीवानगी की चाहत में रहते हैं
तन और मन से बेचैन रहते हैं
दिल-दिमाग़ से बेख़बर रहते हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
यह आपको कैसे व कहाँ ख़बर है।

विरह की वेदना

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे लाचार दिल और दिमाग़ में
आपकी विरह वेदना के ऐसे अहसास हैं

बेचैनी और बेक़रारी में तन और मन तड़पता होगा
ज़ालिम वक़्त करवटें बदलकर कैसे गुज़रता होगा
मधुर मिलन की प्यास में तन बहुत झुलसता होगा
अगन सा तपता हुआ बदन ठण्डी आँहे भरता होगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे बेबस मज़बूर तन और मन में
आपकी विरह वेदना के ऐसे जज़्बात हैं

आगोश में समाकर बातें करने को मन करता होगा
तूफ़ानी सर्द रातों में तन बर्फ़ के जैसा जमता होगा
मिलन की चाहत में तो मन शृंगार से संवरता होगा
बेक़रार तन औ मन में प्यार का ख़ुमार रहता होगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
जुदाई औ बेचैनी की तन्हा रातों में
आपकी विरह वेदना के ऐसे अहसास हैं

विरह वेदना में मन बहुत विचलित रहता होगा
दो बदन एक जान होने के लिये तड़पता होगा
ख़यालों में मेरी यादों का ही अक़्स रहता होगा
ख़्वाबों में मेरा आशियाना आँखों में बसता होगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
विचलित विरह की व्याकुल वेदना में
आपकी विरह वेदना के ऐसे अहसास है

आपका तन और मन तो विरह में बदहाल होगा
आपका दिलो-दिमाग़ तो तन्हाई में बेहाल होगा
आपके ख़यालों में हर पल मेरा ही ख़याल होगा
किसी भी तरह से पास में रहने का सवाल होगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
विरह की वेदना से मेरे तसव्वुर में
आपके दिल और दिमाग़ के ऐसे हालात हैं

आशियाने में हर पल मेरा ही अहसास होगा
दामन में मेरे प्यार का सम्पूर्ण विश्वास होगा
बेबस व बेचैन जज़्बातों मे मेरा निवास होगा
ज़हन में मेरे साथ ही रहने का प्रयास होगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
आपकी विरह की व्याकुल वेदना में
मेरे दिल में ऐसे अहसास और जज़्बात हैं

प्यार के लिये बदन कमल सा खिलता होगा
बाहों में समाने को बेचैन दिल मचलता होगा
प्यार का सागर तन व मन में उफनता होगा
मन में प्यार का दरिया रात-भर बहता होगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
जुदाई और बेचैनी की तन्हा रातों में
आपकी विरह वेदना के ऐसे अहसास है

गुलाबी होंठों में प्यार का प्याला भरता होगा
ख़यालों में हर वक़्त मेरा अक़्स दिखता होगा
मुझ से जुदा रहने का भी मलाल रहता होगा
मेरा ख़याल चैनो-सुकूँ का ज़वाब बनता होगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
विरह की वेदना से मेरे ख़यालों में
आपके दिल व दिमाग़ के ऐसे हालात हैं

मिलन ही आपके ख़यालों में बसता होगा
यादों के सहारे तन्हा वक़्त गुज़रता होगा
दिल लाचार व मज़बूर ज़रूर रहता होगा
ज़माने की बेवफ़ाई से दिल सहमता होगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
विरह की वेदना से मेरे दिल में
आपके तन और मन के ऐसे हालात हैं

दिल रस्म औ रिवाज़ से बेहद लाचार रहता होगा
दिल मधुर मुलाक़ात के लिये बेक़रार रहता होगा
दिमाग़ ख़ुद अपने आपसे बेहद बेज़ार रहता होगा
बदन हसीन बाँहों में समाने को तैयार रहता होगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
विरह वेदना में आपकी चाहत के
मेरे तन और मन में ऐसे ख़यालात हैं

प्यार ही तन और मन का सम्पूर्ण संसार है
हर हालात में प्यार के लिये ही वफ़ादार है
रिश्ते निभाने के लिये बेहद ही ईमानदार है
मुहब्बत के लिये कुछ भी करने को तैयार है।

यादगार मुहब्बत

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
दिल और दिमाग़ से बिना वज़ह
मत हो इस तरह से निराश व हताश

हम भी एक दिन ज़रूर होंगे क़ामयाब
हमारा प्यार ज़माने में रहेगा लाज़वाब
सुहानी चाँदनी रातों में होगा माहताब
प्यार रोशन होगा जैसे होता आफ़ताब

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
रोम-रोम व अंग-अंग से बिना वज़ह
मत हो इस तरह से परेशान और उदास

विरह में हो रही जो व्याकुल वेदना है
कुंदन होने के लिये सोने को तपना है
पत्थर दिल ज़माने को भी पिघलना है
निर्मल और पवित्र होकर हमें मिलना है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
दिल और दिमाग़ से बिना वज़ह
मत हो इस तरह से बेक़रार व बेचैन

हमारा प्यार पवित्र दिल की अमानत है
बेगुनाही के लिये सुबूत की ज़मानत है
मुहब्बत के दीनो-ईमान की ज़ियारत है
मिसाल के लिये दीवानगी में इबादत है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
दिल और दिमाग़ से बिना वज़ह
मत हो इस तरह से हैरान और परेशान

जो अजर औ अमर रहता है वह दीवाना है
जन्नत में जो रहता प्यार में वह मस्ताना है
चाहत व क़शिश में ख़ाक़ हो वह परवाना है
दिल को सुक़ून मिले प्यार का वह तराना है।

महबूब का तसव्वुर

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसा है मेरे दिल में आपका ख़याल

नाज़ुक़ नाज़ुक़ व महकी महकी
प्यार की ख़ुश्बू सुर्ख़ गुलाब की
शीशों में शीशा और धड़कनें हैं
हसीं व ख़ूबसूरत प्यारे दिल की

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन व मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसा है मेरे मन में आपका अहसास

तन से निखरे, मन से महकाये
आँखों में मदहोशी शराब की
क़यामत होता आपका शबाब
जब अदायें होती निखरने की

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसा है मेरे रोम-रोम में आपका निवास

चंदन सा बदन व चंचल चितवन
मुस्कुराता हुआ मासूम सा चेहरा
मस्त और कजरारी यह अखियाँ
यही निशानियाँ आपके यौवन की

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसा है मेरे आँगन में आपका प्रवास

अहसास गुलशन की ताज़गी का
साथ है भीनी-भीनी ख़ुश्बूओं का
महकती है मेरे मन के आशियाँ में
बादे नसीम आपकी घनी जुल्फ़ों की

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसा है मेरे अंग-अंग में आपका अहसास

कुमुद तो खिलता है माहताब से
और कमल खिलता आफ़ताब से
'साथी' का मन खिलता है आपसे
यह चाहत और क़शिश प्यार की।

---

1. बादे नसीम=मृदु हवा **2.** क़यामत=मुसीबत **3.** माहताब=चाँद **4.** आफ़ताब=सूरज।

दिली ख़्वाहिशें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमेशा ऐसे ही हमारी यादों में रहे
हमारी पहली मधुर मुलाक़ात का प्यार

एक-दूजे के संग गुज़रे लम्हें
हमेशा मन में रहेंगे साकार
दिल व दिमाग़ में हर वक़्त
लेते रहेंगे ख़ूबसूरत आकार
अपनी हसीं मुलाक़ातें रहेंगी
दिल औ दिमाग़ में यादगार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमेशा ऐसे ही हमारी यादों में रहे
हमारी पहली मधुर मुलाक़ात का प्यार

हम परमपिता परमेश्वर से
निर्मल पवित्र मन के संग
करें यह दुआ और पुकार
आबाद रहे हमारा हसीन
ख़ुशहाल घर औ परिवार
जीवन में यह शुभ अवसर
जीवन में आते रहें बारम्बार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमेशा ऐसे ही हमारी यादों में रहे
हमारी पहली मधुर मुलाक़ात का प्यार

मधुर मिलन की पावन सरिता
ज़िंदगी में रहे हमेशा लगातार
हमारे आशियाँ में महकती रहे
ता-उम्र के लिये बसन्त बहार
हमेशा हमारे तन व मन में रहे
ऐसी हसीन मुहब्बत का ख़ुमार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमेशा ऐसे ही हमारी यादों में रहे
हमारी पहली मधुर मुलाक़ात का प्यार

हर पल ख़्वाबों और ख़यालों में रहे
ख़ूबसूरत मुहब्बत का हसीन दीदार
अपने आशियाँ में हमेशा महकते रहें
दिन-रात ख़ुशियों के लम्हें बेशुमार
हमारे रोम-रोम में हसीं अहसास रहे
स्वर्ग से भी सुंदर हो हमारा परिवार।

मधुर मिलन

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसा है हमारा पहला मधुर मिलन

तन औ मन में है शहनाईयों का शगुन
बेक़रार दिलो-दिमाग़ को अब है सुक़ून
एक दूसरे को ख़ुश रखने का है जुनून
एक-दूजे के अहसास रहेंगे अब क़ानून

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसा है हमारा पहला मधुर मिलन

मुहब्बत का दायरा हो गया सघन
शांत औ समझदार हो गया ज़हन
गिले व शिक़वों का हो गया दमन
तन-मन में प्रेम का हो गया चलन

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसा है हमारा पहला मधुर मिलन

निर्मल और पवित्र प्यार को नमन
एक-दूजे की हसीं बाँहों में शयन
दो जान और एक हैं हमारे बदन
प्रेम आनन्द में हम दोनों हैं मगन

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसा है हमारा पहला मधुर मिलन

जीवन-साथी होने की है हमारी लगन
घर और परिवार की ओर हमारा गमन
ख़ुशियों औ विश्वास से है नीला गगन
हर हाल में सफल होंगे हमारे ये जतन

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसा है हमारा पहला मधुर मिलन

हमारे प्यार में ऐसी होगी प्रेम अगन
सारे संसार में होगी प्यार की तपन
अब रस्म औ रिवाज़ की होगी गलन
ज़माने में ख़त्म होगी प्यार से जलन

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसा है हमारा पहला मधुर मिलन

सुहावनी चाँदनी रातें हैं रंगीन
ऐतबार से मुलाक़ातें हैं ज़हीन
सुबह व शाम रहती हैं हसीन
शिक़वे औ शिक़ायतें हैं महीन

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसा है हमारा पहला मधुर मिलन

एक-दूजे का तन और मन से वरण
यादों के अहसास से दिल का हरण
मन में भावनायें औ विश्वास है चरण
अंग-अंग हो गये एक दूजे की शरण

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसा है हमारा प्रथम मधुर मिलन।

हमारे मिलन के वक़्त दरिया हो गये नयन
विरह की व्याकुल वेदना का हो गया हनन
विचलित मन में विचारों का हो गया शमन
ख़ुशहाल आँगन में रोशन है चैन औ अमन

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसा है हमारा पहला मधुर मिलन

रोम-रोम में महकता हुआ प्रेम का चमन
अंग-अंग में समाया एक दूसरे का बदन
सारे संसार से बेख़बर था हमारा ज़हन
हसीन सुहागरात की तरह हमारा शयन

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसा है हमारा पहला मधुर मिलन।

मुहब्बत शजर का फलसफ़ा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

चेहरे पर गुल मोहर के शजर के गुलों की रंगत है
सीरत और दिमाग़ में नीम के शजर जैसी संगत है
वादों व इरादों में सागवान के शजर की फ़ितरत है
घर-परिवार के लिए बरगद के शजर की इनायत है

ऐसे हमारे निर्मल प्यार में
ऐसी रंगत, संगत, फितरत और इनायत है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

रिश्तों के बन्धन में बबूल के शजर जैसी हिफ़ाज़त है
ज़ुबान में आम के शजर की तरह रसीली शराफ़त है
आँचल में जामुन के शजर की जैसी हसीन जन्नत है
दुआओं में पीपल के शजर की तरह से पाक़ मन्नत है

ऐसे हमारे पवित्र प्यार में
ऐसी हिफ़ाज़त, शराफ़त, जन्नत और मन्नत है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

आँखों में शीशम के शजर जैसी प्यारी सुंदर इबारत है
रोम-रोम में चन्दन के शजर की ख़ुश्बू की ज़ियारत है
तन और मन में अशोक के शजर जैसी ही अक़ीदत है
दिल व दिमाग़ में इमली के शजर के जैसी नसीहत है

ऐसे हमारे प्यार के अहसास में
ऐसी इबारत, ज़ियारत, अक़ीदत और नसीहत है।

---

1. शजर=पेड़ **2.** गुल=फूल **3.** सीरत=गुण **4.** फ़ितरत=प्रवृत्ति **5.** ईबारत=लिखावट **6.** इनायत=रहम **7.** ज़ियारत=धार्मिक यात्रा **9.** नसीहत=सलाह।